'मॉरीशस में हिंदी पाठ्यक्रम में भोजपुरी के समावेश द्वारा दोनों भाषाओं का परस्पर प्रचार व सुदृढ़ीकरण'

श्रीमती संध्या अंचराज-नवसाह

मॉरीशस संसार का एकमात्र देश है जहाँ औपचारिक शिक्षा-व्यवस्था में भारतीय भाषाओं में हिंदी, उर्दू, तमील, तेलुगु और मराठी शामिल हैं। इन भाषाओं के साथ-साथ अरबी और मंडारीन भाषा को यहाँ प्राच्य भाषाओं (Ancestral Languages) की संज्ञा दी जाती है । भारतीय भाषाओं का अध्ययन-अध्यापन यहाँ प्राथमिक, माध्यमिक और विश्वविद्यालय के स्तर पर सुचारू रूप से चलता है। अतः कक्षा एक से ही , भारतीय मूल के छात्र इन पाँच भाषाओं में किसी एक का चयन करते हैं। इस प्रकार बच्चे अन्य विषयों के साथ-साथ दूसरी भाषा के रूप में हिंदी या अन्य प्राच्य भाषाएँ सीखते हैं।

मॉरीशस की सामाजिक संरचना को देखते हुए यहाँ की भाषा-नीति और भाषा-शिक्षा बहुत जटिल प्रतीत होती है। यह जटिलता मूल रूप से सभी भाषाओं की संख्या , उनके प्रयोग, तथा उनकी सामाजिक-राजनीतिक महत्ता पर आधारित है। मॉरीशस में भाषा-प्रयोग का अध्ययन करने वाले विद्वान फिलिप बेकर और पीटर स्टाइन के अनुसार अंग्रेज़ी भाषा 'ज्ञान' के साथ जुड़ा हुआ है , फ्रेंच भाषा यहाँ की 'संस्कृति' के साथ, क्रेओल-मोरीस्यें 'समतावाद' के साथ तो अन्य प्राच्य भाषा एँ 'पैतृक विरासत' के साथ जुड़ी हुई हैं (CIA World Fact book, 1994)। सतरंगी संस्कृतियों वाली इस स्वर्ग में सतरंगी भाषा जहाँ एक ओर उसकी सुंदरता में चार चाँद लगाती हैं वहीं भाषा-शिक्षा की जटिलता को और भी गहराती हैं।

2011 में सरकार द्वारा , संवैधानिक रूप से मॉरीशस की शिक्षा-प्रणाली में देश की दो मातृभाषाएँ भोजपुरी तथा क्रेओल-मोरीस्यें को शामिल करने का निर्णय, एक ऐतिहासिक कदम है। यह कदम संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा मातृभाषा के संरक्षण और विकास हेतु पारित मंतव्य के अंतर्गत उठाया गया। फलस्वरूप, सभी सदस्य देशों की शिक्षा-व्यवस्था में उस देश की मातृभाषा की उपस्थिति अनिवार्य समझी गई। छात्र के मानसिक विकास और शिक्षा ग्रहण करने की क्षमता में वृद्धि के उद्देश्य से मातृभाषा का शिक्षा-व्यवस्था में शामिल करने के मंतव्य के औचित्य पर प्रश्नचिह्न लगाना विरोधाभास की स्थिति को जन्म देने के समान था । परंतु भोजपुरी तथा क्रेओल-मोरीस्यें को प्राथमिक शिक्षा में सम्मिलित करने का निर्णय चुनौतीपूर्ण था, कारण कि लगभग आधी शताब्दी की कालावधी में स्थापित शिक्षा-व्यवस्था में तथा अन्य भाषाओं के शिक्षण-प्रक्रिया में विघ्न का डर बना रहा था। साथ ही इस देश में भाषा एक बहुत ही संवेदनशील और विवादास्पद मसला है जो भावना और जोश , दोनों को ही जन्म देता है।

फलस्वरूप, भोजपुरी तथा क्रेओल-मोरीस्यें के कार्यांवयन प्रक्रिया को निर्धारित करने हेतु शिक्षा तथा मानव संसाधन मंत्रालय ने दो उच्च स्तरीय बैठकों का गठन किया , जिसमें महात्मा गांधी संस्थान को भोजपुरी भाषा से संबंधित प्रक्रिया का कार्यभार सौंपा गया । भिन्न सामाजिक-धार्मिक संस्थाएँ , भोजपुरी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए काम करने वाली ग़ैर सरकारी संस्थाएँ तथा शिक्षण संस्थाएँ आदि की सदस्यता से उच्च स्तरीय बैठक के गठन के बाद , भाषा, भाषा-विज्ञान, संगीत आदि अनेक विभागों के प्राध्यापक , शिक्षाविद और प्राथमिक पाठशाला में कार्यरत अध्यापकों के साथ एक तकनीकी समिति गठित की गई जिसने भोजपुरी पाठचर्या विकास और पाठ्य-पुस्तक निर्माण के लिए काम प्रारंभ किया।

परंतु प्रारंभ से ही दोनों भाषाओं के शिक्षण की कार्यांवयन प्रक्रिया में समानता देख पाना असंभव सा प्रतीत हो रहा था । सरकार द्वारा प्रस्तावित प्रक्रिया के अनुसार भोजपुरी तथा क्रेओल-मोरीस्यें अन्य भारतीय भाषा के समान ही , विकल्पों में सम्मिलित होती। अतः इसका अभिप्राय यह था कि भारतीय मूल के छात्र कक्षा एक में हिंदी, उर्दू, तमील, तेलुगु, मराठी, अरबी, मंडारीन, भोजपुरी तथा क्रेओल-मोरीस्यें में से किसी एक भाषा का चयन करता । अफ़्रीकी मूल के लोग जहाँ सरकार के इस निर्णय से संतुष्ट थे , वहीं भारतीय मूल के लोग और मुख्य रूप से हिंदी भाषी दुविधा में थे। हिंदी तथा भोजपुरी में किस भाषा का चयन करें ? भाषा-शिक्षण का प्रश्न उठता है तो उसकी उपयोगिता , उसकी सामाजिक महत्ता को रेखांकित करना आवश्यक हो जाता है। महत्ता की दृष्टि से , मानक भाषा और उसके प्रचार-प्रसार के आधार पर हिंदी और भोजपुरी की जब-जब तुलना होती है , हिंदी भाषा का पलड़ा अधिक भारी होता है। इस बात का प्रमाण हमें इस तथ्य से मिलता है कि उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में जब शिक्षा-व्यवस्था में भारतीय भाषाओं को सम्मिलित करने की बात उठी तो हिंदी और उर्दू भाषा की सांस्कृतिक और साहित्यिक प्रतिष्ठा के कारण मॉरीशस में बसे भारतीय मूल को जोड़ने वाली भोजपुरी भाषा को महत्व दिया गया । डॉ. रामयाद "मॉरीशस में खड़ी-बोली हिंदी की स्थापना और प्रसार" विषय पर अपने शोधग्रंथ में इस बात की पुष्टि इन वाक्यों से करते हैं :-

"In fact, literacy and vernacular education presented a problem to Bhojpuri speakers because Bhojpuri was not a written language nor was it regarded as being suitable to be so and formal education thus, of necessity, had to be in Khari Boli Hindi, the language perceived to have both literary and cultural prestige, whether as Hindi or Urdu. It was towards KHB, therefore, that they looked for their educated and cultured modes of expression; there was no hope of Bhojpuri achieving this for them."

इन मुद्दों को ध्यान में रखते हुए तकनीकी समिति ने उच्च स्तरीय बैठक के सामने दूसरा प्रस्ताव रखा। दूसरा प्रस्ताव यह था कि हिंदी पाठ्यक्रम में ही भोजपुरी का समावेश हो , अतः दूसरे शब्दों में , हिंदी की पढ़ाई के अन्तर्गत भोजपुरी के पठन-पाठन का प्रावधान किया जाए।

दोनों भाषाओं की अच्छी शुरुआत की सफलता को मापने के लिए , किए गए सर्वेक्षण से क्रेओल-मोरीस्यें की तुलना में भोजपुरी एक मुक्त विषय के रूप में आने में असफल सिद्ध हुआ , जबकि क्रेओल-मोरीस्यें को मुक्त विषय के रूप में अधिक स्वीकृति मिली। फलतः उच्च स्तरीय बैठक ने तकनीकी समिति द्वारा प्रस्तावित दूसरे प्रस्ताव को पारित कर भोजपुरी का समावेश हिंदी भाषा में करने का निर्णय लिया। इस निर्णय से तकनीकी समिति के सामने कुछ नई चुनौतियाँ और नए प्रश्न भी खड़े हो गए। हिंदी भाषा के निर्धारित पाठ्यक्रम में भोजपुरी का समावेश कैसे और कितना किया जाय ? क्या इससे पाँच वर्षीय बच्चों की ग्रहण-क्षमता में बाधा आ सकती है ? क्या बच्चों के भ्रमित होने की आशंका रहेगी ? भ्रम की स्थिति से बचने के लिए , समंवयन प्रक्रिया कैसी हो ? तथा पूर्वजों की भाषा को बच्चों के समक्ष कैसे प्रस्तुत किया जाए कि बच्चों में उस भाषा के अध्ययन की रुचि बनी रहे ?

पाठचर्या विकास और पाठ्य-पुस्तक निर्माण समिति इन चुनौतियों का सामना करने के लिए सभी विषयों और मुद्दों की चर्चा-परिचर्चा के बाद निम्नोक्त निर्णयों पर पहुँचे:-

1. भोजपुरी का आगमन औपचारिक शिक्षा के अंतर्गत अनौपचारिक रूप में होना चाहिए
2. भाषा-शिक्षण के लिए सूचना- प्रौद्योगिकी और नए साधनों का प्रयोग किया जाना चाहिए
3. समंवयन प्रक्रिया ऐसी हो जिससे बच्चों में भ्रम की स्थिति कम हो, साथ ही हिंदी के अध्ययन में किसी प्रकार की बाधा न पड़े
4. पाठ्य-सामग्री में उपरोक्त सभी मुद्दों से हिंदी का सशक्तिकरण हो

1. **औपचारिक शिक्षा के अंतर्गत भोजपुरी का अनौपचारिक रूप में आगमन :-**

मॉरीशस में हिंदी के उत्थान और प्रगति में मातृभाषा के रूप में भोजपुरी के अनन्य योगदान को अनदेखा करना असंभव प्रतीत होता है। इतना ही नहीं डॉ. हज़ारीसिंह के अनुसार आज़ादी से पहले भोजपुरी ही वह भाषा थी जिसने हिंदू, मुसलमान, तमील, तेलुगु, मराठी, गुजराती को एक सूत्र में बांधे रखा। जयनरायण रॉय भी भोजपुरी भाषा के पक्ष में इसी प्रकार की घोषणा करते हैं । भारत से बाहर हिंदी भाषा की स्थिति के अध्ययन करने पर मॉरीशस में उसकी स्थिति , उसके विकास और प्रचार-प्रसार संतोषजनक और अग्रणी है । बैठकाओं और मंदिरों से निकलकर प्राथमिक , माध्यमिक और उच्चस्तरीय शिक्षा तक तय की गई , इस यात्रा में , अनेक हिंदी सेवी का योगदान रहा ही लेकिन उस भाषा की नींव को सशक्त बनाने में मातृभाषा के रूप में भोजपुरी के योगदान को भुलाया नहीं जा

सकता। वसंत पत्रिका के एक भोजपुरी विशेषांक में डॉ. ठाकुरदत्त पाण्डे मॉरीशस की भोजपुरी को मॉरीशस में हिंदी भाषा की जननी मानते हैं, जिसने हमारे धर्म, संस्कृति और भाषा को बचाए रखने के लिए संजीवनी बूटी का काम किया। इस सुदृढ़ नींव की चर्चा करते हुए डॉ. पाण्डे कहते हैं:-

"भोजपुरी हमें बहुत काम आई है । उसी के द्वारा हमने अपनी हिंदी को देखा , पहचाना और समझा भी। यदि भोजपुरी नहीं होती तो यहाँ हिंदी की जड़ें मज़बूत नहीं होतीं। लगभग डेढ़ सौ वर्ष पूर्व हमारे पूर्व ज भारत से आल्हा खण्ड , हनुमान चालिसा, एवं रामचरितमानस लेकर यहाँ आए थे। इनके प्रताप से भोजपुरी की रक्षा हुई। आगे चलकर भोजपुरी के द्वारा ही हिंदी का प्रचार संभव हुआ।"

मॉरीशस में भोजपुरी के बलबूते हिंदी की नींव रखी गई , जो न केवल पल्लवित-पुष्पित हुई बल्कि मॉरीशसीय हिंदी साहित्य के रूप में विश्व-पटल पर छा भी गई । घर की बोली बैठकाओं, स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में हिंदी के पठन-पाठन में योगदान देती रही। भोजपुरी भाषी होने से हिंदी की पढ़ाई में कम कठिनाइयाँ होती थी ; साथ ही यह भी देखा गया कि भोजपुरी भाषियों को क्रेओल-मोरीस्यें बोलने वाले छात्रों की अपेक्षा उच्चारण और व्याकरण समझने में अधिक सफलता मिलती रही। परंतु पिछले दो-ढाई दशकों से घरों में भोजपुरी भाषा के प्रयोग में कमी के कारण छात्रों द्वारा भाषा से सं पर्क में भी कमी आई है , जिसका स्पष्ट परिणाम शिक्षा के सभी स्तरों में हिंदी पढ़ने वालों की संख्या में गिरावट के रूप में देखा जा सकता है।

हिंदी के अध्ययन के लिए, घरों में भोजपुरी भाषा के प्रयोग से भाषा अर्जन की नींव बाल्यावस्था में ही रखी जाती थी ; हिंदी शिक्षण उस नींव को सींचती थी और भाषा को समृद्ध बनाती थी । लेकिन कालांतर में आकर भाषा के प्रभावन में कमी के कारण उसकी इस आदिम भूमिका को क्षति पहुँची। अतः भोजपुरी के औपचारिक शिक्षण के अंतर्गत अनौपचारिक रूप से आगमन का लक्ष्य उस नींव को सुदृढ़ बनाने का प्रयास था, जिसे कविता, गीत, कहानी और नाटक के माध्यम से छात्रों में केवल श्रवण तथा भाषण कौशल को उभारने के उद्देश्य से किया गया। फलस्वरूप , भाषिक दक्षता में श्रवण और भाषण कौशल को उभारते हुए पाठ्य-सामग्री के रूप में अध्यापकों को छोटी कविताएँ , गीत, कार्टून वाली कहानियाँ और नाटक आदि दिए गए , जहाँ उन्हें लिखित भोजपुरी को छात्रों के समक्ष प्रस्तुत करने की अपेक्षा मात्र सी-डी के माध्यम से उन्हें सुनाना और रटाना था।

2. भाषा-शिक्षण को प्रोत्साहित करने के लिएसूचना प्रौद्योगिकीऔर नए साधनों का प्रयोग

समिति के सामने जो दूसरी चुनौती थी वह पाठ्य-सामग्री और उसके स्वरूप को लेकर थी। पिछले दो-ढाई दशकों में अत्यधिक घरों में भोजपुरी के प्रयोग कम हो जाने से , आज असंख्य छात्र क्रेओल-मोरीस्यें को अपनी मातृभाषा और भोजपुरी को अपने पूर्वजों की भाषा मानते हैं। ऐसी स्थिति में नए साधनों और सूचना-प्रौद्योगिकी का आश्रय लेते हुए प्राथमिक शिक्षा के अंतर्गत भोजपुरी भाषा का प्रवेश प्रभावशाली रहा। संगीत तथा सृजनात्मक लेखन के क्षेत्र में विशेषज्ञों की सदस्यता से पाठ-चर्या विकास तथा पाठ्य-पुस्तक निर्माण समिति ने गीतों और कविताओं को लयबद्ध ही नहीं बनाया , अपितु बाल-मनोविज्ञान को ध्यान में रखते हुए उन्हें संगीत में ढालकर काराओके जैसे संसाधन भी उपलब्ध कराया। भाषा संसाधन केंद्र और भोजपुरी तथा लोक संस्कृति विभाग के सदस्यों ने कहानी और नाटकों को मल्टी-मिडिया में ढालकर उसे अत्यधिक आकर्षक बनाया , और दूसरी कक्षा की पाठ्य-सामग्री के लिए कदम बढ़ाते हुए एनिमेश्यन से 3D एनिमेश्यन तक पहुँच गए। पूर्वजों की भाषा कहलाने वाली भोजपुरी का इस रूप में शिक्षा में प्रवेश अपने-आप में अद्‌भुत रही और क्रेओल-मोरीस्यें की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली भी रही। साथ ही उसने भाषा प्रभावन को बढ़ावा दिया।

3. समन्वयन प्रक्रिया

ध्यातव्य है कि हिंदी भाषा-शिक्षण के अंतर्गत भोजपुरी भाषा के समावेश के निर्णय से हिंदी पाठ्यक्रम तथा उसके लिए निर्धारित समयावधि में कोई बदलाव नहीं लाया गया । इस निर्णय से यह चुनौती सामने आई कि हिंदी पाठ्यक्रम में बिना किसी बदलाव के भोजपुरी का समावेश कितनी मात्रा में हो। अर्थात जो पाठ्यक्रम एक वर्षीय योजना को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है , उसमें भोजपुरी के समावेश से उसको अधिक बोझिल तो नहीं बनाया जा रहा था। क्या हर पाठ में भोजपुरी का तत्व होना अनिवार्य है? अगर हाँ तो क्या अंततः यह पाठ्यक्रम बहुत बोझिल नहीं हो जाएगा ? क्या लिया जाए और कितना लिया जाए , किस पाठ के अंतर्गत क्या रखा जाए ; इन सभी प्रश्नों के आलोक में समिति ने एक समंवयन प्रक्रिया पर काम किया और हर छोटी-सी-छोटी बात पर ध्यान दिया गया। उदाहरणार्थ *"मैया देदे अ बीरवा खेलब होली "*लोक गीत होली पाठ के अंतर्गत रखा गया , स्वतंत्रता दिवस पाठ के अंतर्गत *"हमनी के देस"* कविता और *"हमनी हँय स निमन लैका"* बाल-गीत रखा गया।

समन्वयन प्रक्रिया के साथ-साथ इस बात पर भी ध्यान दिया गया कि पाठ्य-सामग्री में निर्धारित कविताएँ और गीत , प्राथमिक पाठशालाओं में आयोजित संगीत दिवस , स्वतंत्रता दिवस और पुरस्कार वितरण समारोह आदि के अवसर पर छात्रों की प्रस्तुति के लिए उपलब्ध कराया जाए । इसके साथ ही सरकार द्वारा अपनाई गई नीतियों या परियोजनाओं को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया गया और उसे राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की नई रूपरेखा के अनुरूप ढाला गया।

4. **<u>हिंदी का सशक्तिकरण</u>**

हिंदी और भोजपुरी को बहनों की संज्ञा दी जाती है ; ऐसी दो बहनें जिनके रूप-रंग और हाव-भाव में अनेक समानता है । दोनों भाषाओं में समान ध्वनियों के प्रयोग से दोनों भाषाओं के परस्पर प्रचार व सुदृढ़ीकरण किया गया। सामग्री-निर्माण के समय शब्द-चयन आदि पर विशेष बल देते हुए दोनों भाषा-शिक्षण के बीच भ्रम की स्थिति को कम करने की भरपूर चेष्टा की गई , अतः व्याघात से बचने के लिए सफल प्रयास किया गया।

मॉरीशस की भोजपुरी भाषा की अपनी एक अलग पहचान है । भोजपुरी , मगही, मैथिली, अवधी, ब्रज, कन्नौजी आदि अनेक भाषाओं के सम्मिश्रण से तथा औपनिवेश काल में विकसित क्रेओल-मोरीस्यें भाषा के साथ संपर्क में आकर मॉरिशसीय भोजपुरी की अपनी सुगंध , अपनी अस्मिता और पहचान है। मॉरिशसीय भोजपुरी की एक विशेषता यह भी रही है कि क्रेओल-मोरीस्यें से आदान-प्रदान के दौरान उसने शब्दों को केवल उधार में नहीं लिया , अपितु उन्हें अपनी प्रकृति के अनुरूप ढाला । कुछ आलोचक इसे मॉरिशसीय भोजपुरी की कमज़ोरी भी मानते हैं। लेकिन हिंदी भाषा शिक्षण के अंतर्गत भोजपुरी भाषा के समावेश पर विशेष ध्यान देते हुए , समिति ने यह निर्णय लिया कि दोनों भाषाओं में व्याघात से बचने के लिए क्रेओल-मोरीस्यें या फ्रेंच के प्रभाव से आने वाले शब्दों को न लेकर उनके सम्तुल्य शुद्ध भोजपुरी के शब्द या हिंदी के शब्द लिए जाएँगे । उदाहरणार्थ *"लाल लाल फूल , नीला नीला फूल, पियर पियर फूल, झुलवा झूल झुलवा झूल"* गीत में मात्र चार-पाँच ही ऐसे शब्द हैं , जिन्हें भोजपुरी के शब्द कहा जा सकता है , अन्यथा शब्द चयन करते समय दोनों भाषाओं में प्रयुक्त होने वाले शब्दों को ही प्राथमिकता दी गई।

मॉरीशस की औपचारिक शिक्षा व्यवस्था में आने के लिए भोजपुरी भाषा को एक लम्बी यात्रा तय करनी पड़ी। अंतत: हिंदी पाठ्यक्रम में भोजपुरी के समावेश द्वारा वह सफल हुई और दोनों भाषाओं के परस्पर प्रचार व सुदृढ़ीकरण के लिए माध्यम भी बनी। शोध का उद्देश्य शिक्षा-व्यवस्था में भोजपुरी भाषा के प्रवेश के व्यवहारिक पक्ष पर विचार-विमर्श और उसकी कार्यांवयन-प्रक्रिया का एक वर्णनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना है। हिंदी की जड़ों को सींचने वाली भोजपुरी भाषा, आज औपचारिक शिक्षा-व्यवस्था में अनौपचारिक रूप से प्रवेश कर , फिर अपनी उस आदिम भूमिका को निभा रही है , जिसकी पुष्टि Development of Overseas Hindi के शोधकर्ता रीचार्ड बार्ज़ के इस कथन से होता है :-

"Bhojpuri should be maintained and encouraged for the sake of Hindi"

अतः हिंदी भाषा के सशक्तिकरण और प्रोत्साहन के लिए भोजपुरी को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। भोजपुरी की अपनी महत्ता है लेकिन हिंदी शिक्षण में उसके समावेश से तथा भाषा प्रभावन के प्रसार से, दोनों भाषाओं के परस्पर प्रचार व सुदृढ़ीकरण की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किए गए।

प्राध्यापिका, भाषा संसाधन केंद्र,
महात्मा गाँधी संस्थान, मोरीशस
sundhya1501@gmail.com